Research Paper IMPACT FACTOR VALUE : 6.247 | E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 12 | ISSUE : 7 | JULY 2026

शिक्षा, कौशल विकास एवं मानव पूंजी : आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में उच्च शिक्षा की भूमिका

डॉ. तनुजा चंद्राकर [1]

[1]**सहायक प्राध्यापक, शिक्षा विभाग, भारती विश्वविद्यालय, दुर्ग, छत्तीसगढ़.**

ABSTRACT:

र्तमान ज्ञान-आधारित अर्थव्यवस्था में शिक्षा एवं कौशल विकास मानव पूंजी निर्माण के प्रमुख आधार हैं। भारत में नई शिक्षा नीति 2020, स्किल इंडिया मिशन तथा आत्मनिर्भर भारत अभियान के माध्यम से शिक्षा को रोजगार, उद्यमिता एवं नवाचार से जोड़ने का प्रयास किया जा रहा है। प्रस्तुत शोध-पत्र में उच्च शिक्षा की भूमिका का विश्लेषण किया गया है तथा यह अध्ययन किया गया है कि उच्च शिक्षा किस प्रकार मानव पूंजी निर्माण, कौशल विकास एवं राष्ट्रीय प्रगति में योगदान देती है। अध्ययन द्वितीयक स्रोतों पर आधारित वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक प्रकृति का है। निष्कर्षों से ज्ञात होता है कि गुणवत्तापूर्ण उच्च शिक्षा युवाओं की रोजगार क्षमता, नवाचार कौशल एवं सामाजिक उत्तरदायित्व के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। साथ ही कौशल-आधारित शिक्षा आत्मनिर्भर भारत के निर्माण की दिशा में एक प्रभावी साधन सिद्ध हो सकती है।

KEYWORDS:

शिक्षा, कौशल विकास, मानव पूंजी, उच्च शिक्षा, आत्मनिर्भर भारत।

PAPER ACCEPTED DATE:	PAPER PUBLISHED DATE:
20th July 2026	21st July 2026

BIO DATA

डॉ. तनुजा चंद्राकर भारती विश्वविद्यालय, दुर्ग (छत्तीसगढ़) के शिक्षा विभाग में सहायक प्राध्यापक के रूप में कार्यरत हैं। आपके अध्यापन एवं शोध के प्रमुख क्षेत्र शिक्षक शिक्षा, शैक्षिक प्रबंधन, कौशल विकास, मानव संसाधन विकास, उच्च शिक्षा तथा शैक्षिक अनुसंधान हैं। आपने राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठियों, कार्यशालाओं एवं शोध-पत्रिकाओं में अनेक शोध-पत्र प्रस्तुत एवं प्रकाशित किए हैं। शिक्षा के क्षेत्र में गुणवत्तापूर्ण अध्यापन, शोध एवं नवाचार को बढ़ावा देने में आपकी विशेष रुचि है। वर्तमान में आप शिक्षा, कौशल विकास, मानव पूंजी निर्माण तथा उच्च शिक्षा की समकालीन चुनौतियों एवं संभावनाओं से संबंधित विषयों पर शोध एवं अकादमिक गतिविधियों में सक्रिय रूप से संलग्न हैं।

1. प्रस्तावना

वर्तमान युग को ज्ञान, सूचना, नवाचार एवं प्रौद्योगिकी का युग कहा जाता है। किसी भी राष्ट्र की प्रगति केवल उसके प्राकृतिक संसाधनों, औद्योगिक संरचना अथवा आर्थिक पूंजी पर निर्भर नहीं करती, बल्कि उसके मानव संसाधनों की गुणवत्ता, दक्षता एवं सृजनात्मक क्षमता पर भी निर्भर करती है। इसी कारण आधुनिक अर्थव्यवस्थाओं में मानव पूंजी को विकास का सबसे महत्वपूर्ण आधार माना जाता है। मानव पूंजी से आशय व्यक्तियों के ज्ञान, कौशल, अनुभव, नवाचार क्षमता, कार्यकुशलता तथा उत्पादकता से है, जो राष्ट्र के आर्थिक एवं सामाजिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान देती है। मानव पूंजी के निर्माण में शिक्षा की भूमिका सर्वाधिक महत्वपूर्ण मानी जाती है, क्योंकि शिक्षा ही वह माध्यम है जो व्यक्ति के ज्ञान, दृष्टिकोण, मूल्यों एवं व्यवहार में सकारात्मक परिवर्तन लाकर उसे समाज और राष्ट्र के विकास में सक्रिय भागीदारी हेतु सक्षम बनाती है।

इक्कीसवीं शताब्दी में वैश्वीकरण, उदारीकरण तथा डिजिटलीकरण के तीव्र विस्तार ने शिक्षा की प्रकृति एवं उद्देश्य दोनों को परिवर्तित कर दिया है। आज शिक्षा का उद्देश्य केवल साक्षरता या शैक्षणिक ज्ञान प्रदान करना नहीं है, बल्कि विद्यार्थियों में ऐसे कौशलों का विकास करना भी है जो उन्हें बदलती हुई आर्थिक एवं सामाजिक परिस्थितियों के अनुरूप स्वयं को ढालने में सक्षम बना सकें। वर्तमान प्रतिस्पर्धात्मक युग में रोजगार प्राप्त करने तथा कार्यस्थल पर सफलता अर्जित करने के लिए तकनीकी दक्षता, संचार कौशल, समस्या समाधान क्षमता, रचनात्मक चिंतन, नेतृत्व क्षमता तथा नवाचार जैसे गुणों का होना आवश्यक हो गया है। इसलिए शिक्षा और कौशल विकास को एक-दूसरे का पूरक माना जाने लगा है।

भारत विश्व के उन देशों में सम्मिलित है जहाँ युवाओं की संख्या सर्वाधिक है। देश की लगभग आधी से अधिक जनसंख्या युवा वर्ग से संबंधित है, जो भारत की सबसे बड़ी शक्ति मानी जाती है। यदि इस युवा शक्ति को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, उपयुक्त प्रशिक्षण तथा रोजगारोन्मुख कौशल प्रदान किए जाएँ, तो यह राष्ट्र के आर्थिक विकास, सामाजिक प्रगति तथा वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मकता को नई दिशा दे सकती है। इसके विपरीत यदि युवाओं को पर्याप्त शिक्षा एवं कौशल प्राप्त नहीं हो पाते, तो बेरोजगारी, आर्थिक असमानता तथा सामाजिक समस्याओं में वृद्धि हो सकती है। अतः मानव संसाधनों को मानव पूंजी में परिवर्तित करने के लिए शिक्षा एवं कौशल विकास में निवेश अत्यंत आवश्यक है।

इसी आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020, स्किल इंडिया मिशन, डिजिटल इंडिया अभियान, स्टार्टअप इंडिया, मेक इन इंडिया तथा आत्मनिर्भर भारत अभियान जैसी विभिन्न योजनाओं एवं कार्यक्रमों का संचालन किया जा रहा है। इन पहलों का प्रमुख उद्देश्य शिक्षा को कौशल विकास, रोजगार, अनुसंधान, नवाचार एवं उद्यमिता से जोड़ना है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में विशेष रूप से बहुविषयक शिक्षा, व्यावसायिक शिक्षा, अनुभवात्मक अधिगम, डिजिटल शिक्षा तथा अनुसंधान संस्कृति के विकास पर बल दिया गया है, ताकि विद्यार्थी केवल नौकरी खोजने वाले न बनकर रोजगार सृजक एवं नवप्रवर्तक भी बन सकें।

उच्च शिक्षा संस्थान मानव पूंजी निर्माण की प्रक्रिया में केंद्रीय भूमिका निभाते हैं। विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय न केवल ज्ञान के प्रसार के केंद्र होते हैं, बल्कि वे अनुसंधान, नवाचार, नेतृत्व निर्माण तथा सामाजिक परिवर्तन के प्रमुख माध्यम भी हैं। उच्च शिक्षा विद्यार्थियों को विषयगत ज्ञान के साथ-साथ विश्लेषणात्मक चिंतन, तार्किक दृष्टिकोण, निर्णय क्षमता, समस्या समाधान कौशल तथा सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे गुणों से भी समृद्ध करती है। इसके परिणामस्वरूप व्यक्ति की उत्पादकता में वृद्धि होती है तथा वह राष्ट्र की आर्थिक एवं सामाजिक प्रगति में अधिक प्रभावी योगदान देने में सक्षम बनता है।

वर्तमान समय में आत्मनिर्भर भारत की अवधारणा विशेष रूप से प्रासंगिक हो गई है। आत्मनिर्भर भारत का तात्पर्य केवल आर्थिक आत्मनिर्भरता से नहीं है, बल्कि ज्ञान, कौशल, प्रौद्योगिकी, अनुसंधान तथा नवाचार के क्षेत्र में आत्मनिर्भरता प्राप्त करना भी इसका महत्वपूर्ण उद्देश्य है। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए ऐसे मानव संसाधनों की आवश्यकता है जो ज्ञानवान, कुशल, सृजनशील एवं उत्तरदायी हों। इस संदर्भ में उच्च शिक्षा संस्थानों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है, क्योंकि वे देश की युवा शक्ति को आधुनिक ज्ञान एवं

कौशल से सुसज्जित कर आत्मनिर्भर भारत के निर्माण की आधारशिला रखते हैं।

उपर्युक्त परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत शोध-पत्र में शिक्षा, कौशल विकास तथा मानव पूंजी निर्माण के मध्य संबंधों का विश्लेषण करते हुए आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में उच्च शिक्षा की भूमिका का अध्ययन किया गया है। साथ ही यह समझने का प्रयास किया गया है कि गुणवत्तापूर्ण एवं कौशल-आधारित उच्च शिक्षा किस प्रकार युवाओं की रोजगार क्षमता, नवाचार क्षमता तथा सामाजिक उत्तरदायित्व को विकसित कर राष्ट्रीय विकास को गति प्रदान कर सकती है। यह अध्ययन वर्तमान शिक्षा व्यवस्था, कौशल विकास कार्यक्रमों तथा मानव पूंजी निर्माण की अवधारणा को एक समग्र दृष्टिकोण से समझने का प्रयास है।

2. साहित्य समीक्षा

शर्मा एवं गुप्ता (2018) ने उच्च शिक्षा तथा मानव पूंजी निर्माण के मध्य संबंध का अध्ययन किया। अध्ययन में यह पाया गया कि गुणवत्तापूर्ण उच्च शिक्षा व्यक्तियों के ज्ञान, कौशल तथा व्यावसायिक दक्षताओं में वृद्धि करती है। शोधकर्ताओं ने निष्कर्ष प्रस्तुत किया कि उच्च शिक्षा प्राप्त युवाओं की रोजगार क्षमता अधिक होती है तथा वे राष्ट्रीय आर्थिक विकास में अधिक प्रभावी योगदान देने में सक्षम होते हैं। अध्ययन में यह भी स्पष्ट किया गया कि शिक्षा पर किया गया निवेश मानव संसाधनों की गुणवत्ता को उन्नत बनाता है।

2. सिंह एवं कौर (2019) ने युवाओं के कौशल विकास एवं रोजगार क्षमता पर आधारित अध्ययन किया। अध्ययन के परिणामों से ज्ञात हुआ कि कौशल प्रशिक्षण प्राप्त युवाओं में आत्मविश्वास, तकनीकी दक्षता तथा कार्य निष्पादन क्षमता का स्तर अपेक्षाकृत अधिक पाया गया। शोधकर्ताओं ने प्रतिपादित किया कि वर्तमान प्रतिस्पर्धात्मक युग में केवल सैद्धांतिक ज्ञान पर्याप्त नहीं है, अपितु व्यावहारिक कौशलों का विकास भी आवश्यक है। अध्ययन में शिक्षा एवं कौशल विकास के समन्वय पर विशेष बल दिया गया।

3. राष्ट्रीय शिक्षा नीति विश्लेषण प्रतिवेदन (2020) के विश्लेषणात्मक प्रतिवेदन में शिक्षा को रोजगार, कौशल विकास एवं नवाचार से जोड़ने की आवश्यकता पर बल दिया गया है। प्रतिवेदन के अनुसार बहुविषयक शिक्षा, व्यावसायिक प्रशिक्षण तथा अनुभवात्मक अधिगम विद्यार्थियों के समग्र विकास में सहायक सिद्ध होंगे। अध्ययन में यह निष्कर्ष प्रस्तुत किया गया कि नई शिक्षा नीति मानव पूंजी निर्माण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है, जो विद्यार्थियों को आत्मनिर्भर एवं रोजगारोन्मुख बनाने का प्रयास करती है।

4. यूनेस्को प्रतिवेदन (2021) द्वारा प्रकाशित प्रतिवेदन में भविष्य की शिक्षा व्यवस्था में डिजिटल साक्षरता, रचनात्मक चिंतन, समस्या समाधान क्षमता तथा नवाचार कौशलों के महत्व को रेखांकित किया गया है। प्रतिवेदन के अनुसार बदलते वैश्विक परिवेश में शिक्षा का उद्देश्य केवल विषयगत ज्ञान प्रदान करना नहीं, बल्कि विद्यार्थियों को जीवनोपयोगी एवं व्यावसायिक कौशलों से सुसज्जित करना भी है। अध्ययन में यह स्पष्ट किया गया कि कौशल-आधारित शिक्षा सतत विकास एवं सामाजिक प्रगति का आधार है।

5. मिश्र एवं शर्मा (2022) ने उच्च शिक्षा एवं सतत विकास के संबंध का अध्ययन किया। अध्ययन में पाया गया कि विश्वविद्यालय एवं उच्च शिक्षण संस्थान अनुसंधान, नवाचार तथा उद्यमिता को प्रोत्साहित करके मानव पूंजी निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। शोधकर्ताओं ने यह निष्कर्ष प्रस्तुत किया कि उच्च शिक्षा संस्थानों द्वारा विकसित ज्ञान एवं कौशल राष्ट्रीय उत्पादकता, आर्थिक विकास तथा सामाजिक परिवर्तन के प्रमुख आधार बनते हैं।

6. वर्मा एवं पटेल (2023) ने कौशल विकास कार्यक्रमों के माध्यम से युवाओं की रोजगार क्षमता के विकास का अध्ययन किया। अध्ययन के परिणामों से ज्ञात हुआ कि कौशल प्रशिक्षण प्राप्त युवाओं में रोजगार प्राप्त करने की संभावना अधिक होती है तथा उनमें स्वरोजगार एवं उद्यमिता के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित होता है। शोधकर्ताओं ने निष्कर्ष निकाला कि आत्मनिर्भर भारत के निर्माण हेतु शिक्षा तथा कौशल विकास के मध्य प्रभावी समन्वय अत्यंत आवश्यक है।

3. मानव पूंजी की अवधारणा

मानव पूंजी से आशय व्यक्तियों में निहित ज्ञान, कौशल, अनुभव, स्वास्थ्य, कार्यकुशलता, सृजनात्मकता तथा अन्य ऐसी क्षमताओं से है, जो उनकी उत्पादकता एवं कार्य निष्पादन क्षमता को प्रभावित करती हैं। यह एक अमूर्त संसाधन है, जिसका निर्माण शिक्षा, प्रशिक्षण, स्वास्थ्य सेवाओं तथा व्यावहारिक अनुभवों के माध्यम से होता है। आधुनिक आर्थिक चिंतन में मानव पूंजी को किसी भी राष्ट्र की सबसे मूल्यवान संपत्ति माना जाता है, क्योंकि राष्ट्र की वास्तविक प्रगति उसके प्राकृतिक संसाधनों से अधिक उसके मानव संसाधनों की गुणवत्ता पर निर्भर करती है।

मानव पूंजी की अवधारणा का विकास मुख्य रूप से थियोडोर डब्ल्यू. शुल्ट्ज़ तथा गैरी एस. बेकर जैसे अर्थशास्त्रियों के कार्यों से हुआ। इनके अनुसार शिक्षा, प्रशिक्षण एवं स्वास्थ्य पर किया गया व्यय उपभोग नहीं, बल्कि एक प्रकार का निवेश है, जो भविष्य में अधिक आय, उच्च उत्पादकता तथा बेहतर जीवन स्तर के रूप में प्रतिफल प्रदान करता है। इस दृष्टिकोण से शिक्षा को मानव पूंजी निर्माण का सबसे प्रभावी साधन माना जाता है।

वर्तमान ज्ञान-आधारित अर्थव्यवस्था में मानव पूंजी का महत्व निरंतर बढ़ता जा रहा है। औद्योगीकरण, वैश्वीकरण तथा तकनीकी प्रगति के इस युग में केवल भौतिक संसाधन किसी राष्ट्र के विकास के लिए पर्याप्त नहीं हैं। आधुनिक उद्योगों एवं संस्थानों को ऐसे मानव संसाधनों की आवश्यकता होती है, जिनमें तकनीकी दक्षता, नवाचार क्षमता, समस्या समाधान कौशल, नेतृत्व गुण तथा बदलती परिस्थितियों के अनुरूप स्वयं को ढालने की क्षमता विद्यमान हो। इन सभी गुणों का विकास शिक्षा एवं प्रशिक्षण के माध्यम से ही संभव है।

मानव पूंजी के प्रमुख घटकों में शिक्षा, स्वास्थ्य, कौशल विकास, व्यावसायिक प्रशिक्षण, कार्य अनुभव तथा तकनीकी दक्षता सम्मिलित हैं। शिक्षा व्यक्ति के ज्ञान एवं बौद्धिक क्षमता का विकास करती है, जबकि कौशल प्रशिक्षण उसे कार्यस्थल की आवश्यकताओं के अनुरूप दक्ष बनाता है। इसी प्रकार स्वस्थ व्यक्ति अधिक उत्पादक एवं कार्यकुशल होता है, जिससे उसकी कार्यक्षमता में वृद्धि होती है। इसलिए मानव पूंजी निर्माण की प्रक्रिया में शिक्षा, स्वास्थ्य तथा कौशल विकास को समान रूप से महत्वपूर्ण माना जाता है।

भारत जैसे विकासशील देश के लिए मानव पूंजी का विकास विशेष महत्व रखता है। देश की विशाल युवा जनसंख्या को यदि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा एवं रोजगारोन्मुख कौशल प्रदान किए जाएँ, तो यह आर्थिक विकास, सामाजिक प्रगति तथा राष्ट्रीय प्रतिस्पर्धात्मकता को नई दिशा दे सकती है। इसी कारण वर्तमान समय में राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020, कौशल विकास मिशन तथा आत्मनिर्भर भारत अभियान जैसी योजनाओं में मानव पूंजी निर्माण को प्राथमिकता प्रदान की गई है। अतः यह कहा जा सकता है कि मानव पूंजी किसी भी राष्ट्र के सतत एवं समावेशी विकास की आधारशिला है तथा शिक्षा उसके निर्माण का सबसे प्रभावशाली माध्यम है।

मानव पूंजी के प्रमुख घटक हैं—

- ✓ शिक्षा
- ✓ कौशल
- ✓ स्वास्थ्य
- ✓ प्रशिक्षण
- ✓ तकनीकी दक्षता
- ✓ नवाचार क्षमता

4. उच्च शिक्षा और मानव पूंजी निर्माण

- ➢ **ज्ञान का विकास**

  उच्च शिक्षा व्यक्तियों को उन्नत ज्ञान प्रदान करती है जिससे उनकी बौद्धिक क्षमता विकसित होती है।

- ➢ **कौशल संवर्धन**

  उच्च शिक्षा विद्यार्थियों में तकनीकी, व्यावसायिक तथा संचार कौशलों का विकास करती है।

- ➢ **अनुसंधान एवं नवाचार**

  विश्वविद्यालय शोध एवं नवाचार के केंद्र होते हैं जो नई तकनीकों और विचारों को जन्म देते हैं।

- ➢ **नेतृत्व क्षमता**

  उच्च शिक्षा नेतृत्व, निर्णय क्षमता तथा सामाजिक उत्तरदायित्व का विकास करती है।

5. कौशल विकास की आवश्यकता

वर्तमान प्रतिस्पर्धात्मक युग में केवल डिग्री पर्याप्त नहीं है। उद्योगों को ऐसे मानव संसाधन की आवश्यकता है जिनमें व्यवहारिक एवं तकनीकी कौशल उपलब्ध हों।

कौशल विकास के प्रमुख लाभ—

- रोजगार क्षमता में वृद्धि
- उद्यमिता को बढ़ावा
- आय में वृद्धि
- आर्थिक विकास
- सामाजिक सशक्तिकरण

6. नई शिक्षा नीति 2020 एवं कौशल विकास

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में कौशल विकास को शिक्षा का अभिन्न अंग बनाया गया है।

मुख्य विशेषताएँ—

- बहुविषयक शिक्षा
- व्यावसायिक शिक्षा का समावेशन
- डिजिटल अधिगम
- अनुभवात्मक अधिगम
- अनुसंधान एवं नवाचार
- उद्यमिता विकास

7. आत्मनिर्भर भारत और उच्च शिक्षा

आत्मनिर्भर भारत अभियान भारत सरकार द्वारा प्रारंभ की गई एक महत्वपूर्ण राष्ट्रीय पहल है, जिसका उद्देश्य देश को आर्थिक, तकनीकी, शैक्षिक, औद्योगिक तथा सामाजिक दृष्टि से अधिक सक्षम और स्वावलंबी बनाना है। आत्मनिर्भरता का अर्थ केवल विदेशी वस्तुओं पर निर्भरता कम करना नहीं है, बल्कि देश के भीतर ऐसे संसाधनों, कौशलों, नवाचारों तथा क्षमताओं का विकास करना है जो राष्ट्र को दीर्घकालीन एवं सतत विकास की दिशा में अग्रसर कर सकें। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए गुणवत्तापूर्ण मानव पूंजी का निर्माण अत्यंत आवश्यक है, और मानव पूंजी निर्माण का सबसे प्रभावी माध्यम उच्च शिक्षा है।

उच्च शिक्षा किसी भी राष्ट्र के विकास की आधारशिला मानी जाती है क्योंकि यह व्यक्तियों को ज्ञान, कौशल, अनुसंधान क्षमता, नवाचार दृष्टि तथा नेतृत्व गुणों से सुसज्जित करती है। विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय केवल डिग्री प्रदान करने वाले संस्थान नहीं हैं, बल्कि वे ऐसे केंद्र हैं जहाँ नई सोच, नवीन तकनीकों तथा रचनात्मक विचारों का विकास होता है। उच्च शिक्षा विद्यार्थियों में आलोचनात्मक चिंतन, समस्या समाधान क्षमता, निर्णय लेने की योग्यता तथा उद्यमिता कौशल विकसित करती है, जो आत्मनिर्भर भारत के निर्माण के लिए अत्यंत आवश्यक हैं।

वर्तमान समय में उद्योगों, सेवा क्षेत्रों तथा तकनीकी संस्थानों को ऐसे मानव संसाधनों की आवश्यकता है जो बदलती परिस्थितियों के अनुरूप स्वयं को ढाल सकें तथा नवीन चुनौतियों का समाधान प्रस्तुत कर सकें। उच्च शिक्षा संस्थान विद्यार्थियों को रोजगारोन्मुख ज्ञान एवं कौशल प्रदान करके उन्हें कार्यक्षेत्र के लिए तैयार करते हैं। इसके परिणामस्वरूप युवाओं की रोजगार क्षमता में वृद्धि होती है तथा वे स्वरोजगार एवं उद्यमिता की ओर भी अग्रसर होते हैं। इससे न केवल रोजगार के अवसर बढ़ते हैं, बल्कि आर्थिक विकास को भी गति मिलती है।

आत्मनिर्भर भारत अभियान में नवाचार एवं अनुसंधान को विशेष महत्व दिया गया है। उच्च शिक्षा संस्थानों में संचालित शोध कार्य नई तकनीकों, उत्पादों तथा सेवाओं के विकास में योगदान देते हैं। आज अनेक विश्वविद्यालयों में नवाचार केंद्र, स्टार्टअप प्रकोष्ठ तथा उद्यमिता विकास केंद्र स्थापित किए जा रहे हैं, जो विद्यार्थियों को नए व्यवसाय स्थापित करने तथा रोजगार सृजन की दिशा में प्रेरित करते हैं। इस प्रकार उच्च शिक्षा आत्मनिर्भर भारत की अवधारणा को व्यवहारिक रूप प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 ने भी आत्मनिर्भर भारत के लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए शिक्षा को कौशल विकास, अनुसंधान, नवाचार तथा व्यावसायिक दक्षताओं से जोड़ने पर बल दिया है। नीति का उद्देश्य ऐसे शिक्षार्थियों का निर्माण करना है जो केवल ज्ञान प्राप्त करने वाले न होकर समाज और राष्ट्र के विकास में सक्रिय योगदान देने वाले उत्तरदायी नागरिक बन सकें। बहुविषयक शिक्षा, व्यावसायिक प्रशिक्षण, डिजिटल अधिगम तथा अनुभवात्मक शिक्षण जैसी व्यवस्थाएँ विद्यार्थियों को आत्मनिर्भर एवं सशक्त बनाने में सहायक सिद्ध हो रही हैं।

अतः यह कहा जा सकता है कि आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में उच्च शिक्षा की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण एवं बहुआयामी है। उच्च शिक्षा के माध्यम से विकसित मानव पूंजी राष्ट्र की उत्पादकता, नवाचार क्षमता, आर्थिक प्रगति तथा वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मकता को सुदृढ़ बनाती है। इसलिए आत्मनिर्भर भारत के लक्ष्य की प्राप्ति के लिए उच्च शिक्षा की गुणवत्ता, पहुँच एवं प्रासंगिकता को निरंतर सुदृढ़ करना समय की महत्वपूर्ण आवश्यकता है।

क्षेत्र	उच्च शिक्षा का योगदान
रोजगार	कुशल मानव संसाधन
उद्योग	तकनीकी दक्षता
उद्यमिता	स्टार्टअप एवं नवाचार
समाज	जागरूक नागरिक
अर्थव्यवस्था	उत्पादकता वृद्धि

8. चुनौतियाँ

1. शिक्षा एवं उद्योग के बीच अंतर
2. कौशल प्रशिक्षण की सीमित उपलब्धता
3. डिजिटल असमानता
4. गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक सीमित पहुँच
5. अनुसंधान हेतु अपर्याप्त संसाधन

9. सुझाव

1. उद्योग-शिक्षा सहयोग को बढ़ावा दिया जाए।
2. कौशल आधारित पाठ्यक्रमों का विस्तार किया जाए।
3. डिजिटल अवसंरचना को मजबूत किया जाए।
4. अनुसंधान एवं नवाचार को प्रोत्साहित किया जाए।
5. ग्रामीण क्षेत्रों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित की जाए।
6. इंटर्नशिप एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम अनिवार्य किए जाएँ।

10. निष्कर्ष

शिक्षा एवं कौशल विकास मानव पूंजी निर्माण के दो प्रमुख स्तंभ हैं। उच्च शिक्षा व्यक्तियों की ज्ञान, कौशल, नवाचार तथा नेतृत्व क्षमता को विकसित कर राष्ट्र के आर्थिक एवं सामाजिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान देती है। नई शिक्षा नीति 2020 तथा आत्मनिर्भर भारत अभियान ने शिक्षा को रोजगार और कौशल विकास से जोड़कर मानव संसाधन को सशक्त बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं। अतः गुणवत्तापूर्ण एवं कौशल-आधारित उच्च शिक्षा भारत को आत्मनिर्भर एवं विकसित राष्ट्र बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

REFERENCES

1. अग्रवाल, पी. (2015). *भारतीय उच्च शिक्षा : उभरती चुनौतियाँ एवं संभावनाएँ*। नई दिल्ली: सेज पब्लिकेशन्स।

2. बेकर, जी. एस. (1993). *ह्यूमन कैपिटल : ए थ्योरिटिकल एंड एम्पिरिकल एनालिसिस विद स्पेशल रेफरेंस टू एजुकेशन* (तृतीय संस्करण)। शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रेस।

3. भारत सरकार. (2020). *राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020*। नई दिल्ली: शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार।

4. कौशल विकास एवं उद्यमिता मंत्रालय. (2023). *स्किल इंडिया वार्षिक प्रतिवेदन*। नई दिल्ली: भारत सरकार।

5. मिश्र, एस., एवं शर्मा, आर. (2022). उच्च शिक्षा एवं सतत विकास : भारतीय परिप्रेक्ष्य। *शैक्षिक नियोजन एवं प्रशासन पत्रिका*, 36(2), 125–138।

6. ओईसीडी (OECD). (2022). *स्किल्स आउटलुक 2022 : बिल्डिंग स्किल्स फॉर अ रेजिलिएंट फ्यूचर*। पेरिस: ओईसीडी पब्लिशिंग।

7. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद (एनसीईआरटी). (2023). *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा–2023*। नई दिल्ली: एनसीईआरटी।

8. शर्मा, पी., एवं गुप्ता, एस. (2018). मानव पूंजी निर्माण में उच्च शिक्षा की भूमिका। *भारतीय शिक्षा समीक्षा*, 45(3), 52–67।

9. सिंह, आर., एवं कौर, एम. (2019). कौशल विकास एवं युवाओं की रोजगार क्षमता का अध्ययन। *भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान पत्रिका*, 14(2), 88–101।

10. सिंह, पी., एवं वर्मा, आर. (2023). भारतीय युवाओं में कौशल विकास एवं रोजगार क्षमता। *अंतरराष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान पत्रिका*, 12(3), 45–59।

11. शुल्ट्ज़, टी. डब्ल्यू. (1961). मानव पूंजी में निवेश। *अमेरिकन इकोनॉमिक रिव्यू*, 51(1), 1–17।

12. तिलक, जे. बी. जी. (2002). भारत में शिक्षा एवं आर्थिक विकास। *इंडियन जर्नल ऑफ एजुकेशनल प्लानिंग एंड एडमिनिस्ट्रेशन*, 16(2), 145–171।

13. यूनेस्को. (2021). *रीइमेजिनिंग आवर फ्यूचर्स टुगेदर : ए न्यू सोशल कॉन्ट्रैक्ट फॉर एजुकेशन*। पेरिस: यूनेस्को।

14. विश्व बैंक. (2020). *ह्यूमन कैपिटल इंडेक्स 2020 अपडेट : कोविड-19 के समय में मानव पूंजी*। वाशिंगटन डी.सी.: विश्व बैंक।

15. वर्मा, एस., एवं पटेल, डी. (2023). आत्मनिर्भर भारत के संदर्भ में कौशल विकास कार्यक्रमों की प्रभावशीलता। *भारतीय विकास अध्ययन पत्रिका*, 18(1), 75–89।